Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैंने तुम्हारी मृत्यु को देखा है

सुरेन्द्र बोथरा 'मनु'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foun… ing by Ika…

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रस्तुत कविताएँ सघन अनुभूतियों और आत्मबोध की सर्जनात्मक और रागात्मक काव्याभिव्यक्तियाँ हैं। विभिन्न जीवनानुभवों को आत्मसात् कर अपने विलक्षण काव्य-शिल्प के माध्यम से जो सर्जनाएँ कवि के मानस से सहजोद्भूत हुई हैं, वे कविता के निकष पर पूर्णतया खरी उतरती हैं। ये स्वत:प्रसूत रचनाएँ कवि के नैसर्गिक काव्य-सामर्थ्य का पुष्कल प्रमाण हैं। जिस संवेदना की बात यहाँ पर कही जा रही है वह आज के भौतिकता-संकुल परिदृश्य में प्राय: लुप्त ही दिखाई दे रही है।

निरायास रचित ये कविताएँ हमारी अपनी जीवनानुभूतियों की कविताएँ हैं। इसीलिए इनको पढ़कर हम अपने को प्रतिबिम्बित पाते हैं। यही कारण है कि इनमें एक अपनापन है जो हमारे मर्म का गहराई से स्पर्श करता है।

भाव और भाषा में जो एक सुन्दर समीकरण है वही इन कविताओं की 'अपील' का मुख्य पृष्ठाधार है। सम्यक् शब्द संयोजन, यथा स्थान बिम्ब-विधान, उक्ति-वैचित्र्य और विदग्ध अभिव्यक्ति—ये सभी घटक कवि की भावयित्री और काव्ययित्री प्रतिभा के सुन्दर समवाय को अभिप्रमाणित करते हैं।

—डॉ. मनोहर प्रभाकर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Poetry

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैंने तुम्हारी मृत्यु को देखा है

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सर्जना, बीकानेर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैंने तुम्हारी मृत्यु को देखा है

सुरेन्द्र बोथरा 'मनु'

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc No.....5157...
Dated 28/12/23

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रकाशक

सर्जना

शिवबाड़ी रोड, बीकानेर 334003

सर्वाधिकार सुरक्षित

बिना प्रकाशक की लिखित अनुमति के इस पुस्तक को या इसके किसी भी अंश को इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी उपकरण, यथा कैमरा, फोटो कापियर, रिकॉर्डिंग आदि द्वारा या अन्य किसी भी माध्यम से किसी भी रूप में, कहीं भी प्रेषित, प्रस्तुत अथवा पुनरुत्पादित न किया जाए।

© सुरेन्द्र बोथरा 'मनु'

प्रथम संस्करण : 2012 ई.

मूल्य : एक सौ पचास रुपये मात्र

मुद्रक : सांखला प्रिंटर्स, विनायक शिखर
शिवबाड़ी रोड, बीकानेर 334003

ISBN 978-81-89303-50-1

MAINE TUMHARI MARITYU KO DEKHA HAI (*Poems*)
by Surendra Bothara 'Manu' ₹ 150

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रथम परिचय से बन कर आत्मीय
पग-पग चलती रही नेह की डगर पर

अट्टहास से तनिक कम
स्मित से कहीं अधिक
पल-पल खनखनाती रही
खिलखिलाहट के घुंघरू

फिर हर्ष की हिलोर सी
अनायास धरती से उछल
सब के मनों में समा गई
अरे! वह सहजन्मा अभी तो यहीं थी
अभी-अभी कहाँ गई? ... ...

बहन अनीता भंडारी (पुष्पा, बडी मुन्नी)
की स्नेहिल स्मृति को
इनमें से कुछ कविताएँ उसे बहुत पसन्द थीं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आत्मकथ्य

किसी शान्त झील में कोई कंकर फेंक दे! मरुभूमि की सुनहरी लहरों पर डूबते तैरते कपाल पर रहे दो तिमिर-कूपों से उठती वेदना की अनुगूंज मृगतृष्णा की मनोहारी काया को किरचियों में बिखरा दे! ट्रेन की खिड़की की चौखट के पार सरसों के पीले खेतों को हवा का मंद झोंका हिलोरों से भर जाय! व्याधि से पीड़ित प्रियजन की पलपल खिरती देह और असह्य पीड़ा की मूक अभिव्यक्ति नियति के सम्मुख पौरुष की असमर्थता का विज्ञापन बन जाय! सोए शिशु के अधरों की अकारण अपेक्षामुक्त मन्द मुस्कान मन को बयार सी सहला दे! सुनामी की प्रलयंकारी लहरें विशाल निर्माणों को तिनकों सा बिखरा कर महत्त्वाकांक्षाओं की सूक्ष्मता और अस्थिरता का भान करा दें! विश्व-व्यापी-वितान में फेंका गया एक विचार-कण बिम्बित-प्रतिबिम्बित हो आशा-अभिलाषाओं का कल्पवृक्ष बन जाय! तृष्णा की डायन के सम्मोहन से जन्मे अत्याचार से बिछी लाशों के बीच एक नन्ही बालिका के छिन्न मस्तक की विस्फारित आँखों में व्यवस्था की नपुंसकता के प्रति आक्रोश के अंगारे चमकने लगें। पुनर्निर्माण में छिपी जिजीविषा इस समस्त घटनाक्रम के आरोह-अवरोह में चेतन की विराट सत्ता को पुनः-पुनः स्थापित करती रहे।

ऐसी ही घटनाएं, ऐसे ही चित्र और ऐसे ही अनुभव संवेदना को आलोड़ित कर दें तो विचारों के तरंगित कण कभी-कभी अनायास ही लयबद्ध हो जाते हैं। शायद तभी कविता का जन्म होता है। अनुभवों की प्रौढ़ता और संवेदनों की गहराई बढ़ने से धीरे-धीरे शिल्प भी आ जुड़ता है, पर मीठी वे ही अभिव्यक्तियाँ लगती हैं जिनमें शिल्प भी कथ्य के समान निर्झर-सा नैसर्गिक प्रवाह प्राप्त कर लेता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जब भी जो भी उद्गार स्वाभाविक रूप से जिस भी विषय पर जिस भी शैली में मन में उठे, उन्हें लगभग ज्यों का त्यों काग़ज़ पर उतारता रहा। नैसर्गिक अनुशासन में स्वच्छन्द रहने को ही श्रेय समझा। किसी विधा या धारा या परम्परा से जुड़ कर अभिव्यक्ति को अवरोधित करना रुचा नहीं। उन्हीं संवेदन प्रेरित शब्दों में ढले भावों के कुछ गुलदस्ते प्रस्तुत हैं। यदि ये पाठक के मन को छू सकें तो सार्थक हो पड़ेंगे।

यह संकलन 1971 से 1986 के बीच की रचनाओं में से चयनित है। चयन में सहयोग और बहुमूल्य सुझावों के लिए स्नेही भाई श्री नन्दकिशोर आचार्य का आभार। रचनाक्रम के इस कालखण्ड में प्रेरक स्नेह, स्वस्थ प्रोत्साहन और आशीर्वाद के लिए दिवंगत मन्ना (श्री भवानी प्रसाद मिश्र), श्री प्रभाकर माचवे एवं पिताश्री शुभकरण सिंह बोथरा को कृतज्ञतापूर्ण नमन।

'मनु'

जयपुर

दिनांक 11-11-11

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुक्रमणिका

मुझको जगा दे 11
बड़ी-सी गाड़ी 14
रोशनियाँ 16
एकान्त 18
कुचले शरीर की आत्मा 19
विनाश के बाद 23
ईमानदार प्रश्न 26
छाया का छलावा 28
उदास सत्य 30
अकाल की प्यास 31
कठपुतली वाला 34
मज़ार पर 38
बोलती दीवारें 40
जीते क्षण 42
ओ बड़े आदमी 43
झटक दो कंधा 45
आह्वान बदलना होगा 48
आस्था 50
महानगर का दिन 53
खण्डहर 55
किरण 59
उगते ही रहना होगा 60
अनाथ सत्य 62
ठगा गाँव 64
रीते लोग 67
रिवाज़, अहसास और उम्र 68
मार्ग के खड्डे 70
क्रान्ति और आदमी 71
आदम की सन्तान 72
कलाकारों के प्रति 73
समय की व्यथा 76
मुस्कानें गिननी होंगी 77
अमर बेल 79
अनुशासन : एक अनुमान 82
निस्तब्ध चेतना 85
ज़िम्मेदारी 87
सत्य कभी सोता नहीं 88
यथार्थ 89
पुराना प्रश्न 90
ताज़ा हवा 94
उम्र 96
छूने की वाँछा 97
प्रकाश का स्रोत 98
समर्पण 101
रोहिड़े 102
दोस्तों ने मार दिया 104
विश्वास 106
यहीं बुद्ध ने जन्म लिया था? 108
बियाबानों भटकता मन 110
कबीर 112

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुझको जगा दे

खो गई है कहाँ तू
संवेदने!
मुझको जगा दे।

वो देख
मोची ठोकता जो कील
मेरी एड़ियों में
चुभ रही है
दर्द दिखता है
मगर
अनुभूत होता ही नहीं

जम चला जो रक्त
सूनी-सी शिराओं में
उसको बहा दे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खो गई है कहाँ तू
संवेदने!
मुझको जगा दे।

वो उधर
अन्धी भिखारिन
वक्ष पर जिसके
चिपक कर
हड्डियों का एक ढाँचा
चूसता है ममता की
खोखली पयहीन सूखी देह
उस याचना की अँगुलियाँ
धंस रही हैं पेट में मेरे
उमेठे जा रही हैं आँत
और मैं हँस रहा हूँ

गई मुझ से रूठ
जो करुणा
उसको ही मना दे

खो गई है कहाँ तू
संवेदने!
मुझको जगा दे।

उस तरफ,
वह भीड़ कैसी?
कौतूहल मेरा
मुझे उचका
उधर को झाँकता है
दो चरण, दो हाथ वाला
एक धड़

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बिखरा पड़ा है रास्ते में
और उसका शीश कुचला
बिछ गया है
धूल में
मांस का वह लोथड़ा
उठकर पकड़ता बाँह मेरी
किन्तु मैं
उस रौंदती
पाशविक-सी भीड़ के संग
डग मिलाये
दौड़ता ही जा रहा हूँ

खो गया
साहस कहाँ मेरा
इतना भर बता दे

खो गई है कहाँ तू
संवेदने!
मुझको जगा दे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बड़ी-सी गाड़ी

मेरे दादा ने
इस धरती को
सींचा था
अपनी मेहनत
अपने पसीने से

उसके बाद
मेरे जनक ने
इसी धरती को
सींचा था
अपने रक्त से
अनगिनत बंधुओं के
ठंडे नहीं
गरम लहू से

और अब मैं
आज अपने वर्तमान से
अपने भविष्य से
कल के अपने सपनों से
अपनी सन्तान के
आने वाली समस्त पीढ़ी के
अरमानों से
सींच रहा
इस धरती को
पर फिर भी
मैं अभी तक खड़ा हूँ
वहीं जहाँ था

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरी सन्तान भी
शायद
उसी कृतज्ञता रहित परिवेश
लिप्सा में सने अकर्मण्य
उनके पसीने से रक्त के लिये
रक्त-सा पसीना बहाती
अभाव में पिसती रहें

मेरी और मेरे बाद उनकी
ज़िन्दगी
विकास के राजपथ के किनारे
गाडुलिया लुहारों-सी यायावर
निर्दय मौसम को सहती
घिसट-घिसटकर
चलती थी – है – रहे
मेरे खून से सिंची
धरती के
धान से भरे हैं
जिनके पेट
देश के उन चन्द माझियों की
सजी-सँवरी ज़िन्दगी
मेरे ही श्रम के पहियों सजी
बड़ी-सी गाड़ी की तरह
झट से
आराम से
गुज़र जाती है
विकास के
उसी राजपथ पर।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रोशनियाँ

बंगले के लॉन में
डालियों के झुरमुट पर पड़ती
सद्य:स्नाता के अंगों-सी कोमल
रोशनी

सड़क के किनारे
बिजली के खम्भों से
टपकती
नगरवधुओं की
भटकती आत्माओं-सी
निरुद्देश्य रोशनी

गगन छूती अट्टालिका के
सजे कमरों की
बन्द खिड़कियों से
झाँकती
विवशता में घुटी
अंतिम साँसों-सी
सहमी रोशनी

आँगन की दीवार पर टंके
बल्ब से थिरक
झरती,
घुटनों के बल चलते
नन्हे बालक-सी
भोली रोशनी

हवाई अड्डे से उछल
निबिड अंधकार भरे शून्य में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वृत्त बन
विलीन होती,
अकेले यायावर-सी
निरीह रोशनी

इस महानगर में
आदमी-सी ये रोशनियाँ
और रोशनी से ये.आदमी
किसके पीछे
क्यों भटकते हैं?
अजूबा यह
कि इन रोशनियों में
आदमी नहीं चमकता
आदमी में
ये रोशनियाँ खो जातीं
इतना अँधेरा आदमी
कि रोशन नहीं होता

सुबह के सूरज में
ये रोशनियाँ गुम हो जातीं
और फिर गुम हो जाता
वह सूरज भी
इन आदमियों के मन के
घने अंधकार में

शाम फिर आती है
और मैं खोजता हूँ
खोजता ही रहता हूँ
रोशनी में आदमी दिखते
पर आदमी में
रोशनी नहीं दिखती।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एकान्त

एक सूखे खेत की
टूटी, मुँडेर-सी दीवार
और उस पर
एक नागफनी-सी झाड़ी!

एक मसखरे ने
पोंछ लिये आँसू
और बोला :
'हाय!
कितना व्यथित है एकान्त!'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुचले शरीर की आत्मा

सड़ी लाशों की गन्ध
मैं पहचानता हूँ
पर आज
यह उससे भी कहीं अधिक
दम घोटती दुर्गन्ध
सारे वातावरण में
फैल रही

यह गन्ध
सड़ी लाशों की नहीं
जीवित-चलते-फिरते
निर्लज्ज से हँसते
मांसभक्षियों की साँसों की है
वे साँसें जो रक्त-सने
मुँह से निकल रही हैं

टैंक के नीचे कुचला शरीर
धरती पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक कहानी आँक गया
दूसरे दिन अखबारों में
चन्द अक्षर छपे
सबने पढ़े
भूल गये

एक आत्माहीन शरीर
अधनंगी तवायफ
खिलखिलाई
दूसरे दिन अखबारों में
चन्द अक्षर छपे
सबने पढ़े
शौक से चर्चा की

एक हैवान ने
एक अबला को नंगा कर दिया
सबने मुँह फेर लिया
उसकी खुली छातियाँ
गिद्ध नोंचते
और लोग
'शायद यह गलत है'
कहते दूर चले जाते,
मांसभक्षियों के झुंड
नंगे शरीर पर टूट पड़ते
बलात्कार का दृश्य
सभ्य लोग रेशमी सभ्यता से
बस ढाँप देते
भीतर से उठती सिसकी
कब सुनते

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हिजड़े तालियाँ बजा-बजा
चिल्लाते—
बचाओ रे
इसको कोई तो बचाओ,
पर वह षोडष शरीर
कुचला-रौंदा
साँस लेता मांस का लोंदा
पड़ा है ज्यों का त्यों

उसकी आँखें
जो देखती हैं अब भी
सूना पथ निहारती पूछती हैं :
वो मुहम्मद कहाँ है?
कहाँ है वो कृष्ण और ईसा?

उसकी पुकार डूब गई
मन्दिरों के कीर्तनों में
मस्जिदों की अजानों में
और गिरजों की घण्टियों में

एक मुसलमान ने
क़ुरान को दफना दिया
एक हिन्दू ने गीता को
झोंक दिया आग में
और एक ईसाई ने बाइबिल को
सलीब पर कीलों से ठोक दिया

सभी एक-दूसरे के गले में हाथ डाल
नाचते
इन्सानों के कुचले जाने को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दर्शकों से देखते
सभी इन्सानियत को कुचलते

दूर पड़ी
मांस जड़ी
वे आँखें
अपने सीलते घाव देखतीं
और देखतीं मरहम को
आबनूस-सी व्यर्थता पर
घिसते-चमकते
फिर तकतीं शून्य को
वे फटी-फटी आँखें
जिनमें अब भी चमक है
और सपना है
उस कल का
जब उसकी नीयत
नियति बन जायेगी
और उससे जन्मे फूलों को
कोई महज इसलिये नहीं कुचलेगा
कि वो अपनी माँ को
माँ कहकर पुकारना चाहते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विनाश के बाद

वो सुनहली धूप
अब कुम्हला गई है
पड़ गई है कूब किरणों को
हवा सहमी हुई है
रक्त से सींची धरा पर
धान तो फूटा
मगर
विष से भरा है
पत्थरों के तोड़ सीने
बह चली जलधार
पर वह आग-सी है
रक्त-प्लावित झील में
देखकर प्रतिबिम्ब अपना
वह सलोनी चाँदनी
ठिठकी हुई है—

क्या पाओगे आज
अब क्या भर सकोगे अंक में?
ओ प्रवासी!
आज क्यों लौटे
बताओ
हो चुका जब
शेष सब कुछ!

चीखती प्राचीर
चौखट ये सिसकते
ये बिलखते द्वार
पथराए मुखौटे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उपवनों में घूमतीं
बेजान लाशें
और सड़कों पर पड़े
ये लोथड़े बिन हाड़ के
संग्रहालय में दुबक कर
बचपना
झाँकता चुपचाप टूटी टाँड से
स्नेह
जाकर सज गया दुकान में
प्यार
बेचारा पिघल कर बह रहा है
भट्ठियों-सी झोंपड़ी
या घर-भवन अट्टालिका से
या फिर धुआँ बन
क्षितिज पर
लिख रहा है
गीत दर्दीले
बिखरती पंक्तियों में—

किसे दोगे सान्त्वना
अब आँसू किसके पोंछोगे?
ओ प्रवासी!
आज क्यों लौटे
बताओ
हो चुका जब
शेष सब कुछ!

चेतना
चुपचाप जा कर छुप गई है
टिमटिमाती बत्तियों के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ठीक नीचे
काठ की उन पेटियों के
ठीक पीछे
वेदना जा सो गई है
रास्ते के ऐन बीचोबीच ठहरी
जंग से भरपूर
खिरती बन्द गाड़ी में
इस अनोखी
सौम्य लगती शान्ति में
वो उस तरफ
छू रहे आकाश
ऊँचे हड्डियों के ढेर
और उनके बीच
वह विक्षिप्त छाया
दौड़ती-सी फिर रही है
भंग करता शान्ति को
उसके गले का
हृदयभेदी अट्टहास
सुबकने के बीच उठता
गगनभेदी चीत्कार—

तुम क्या सह सकोगे?
मौत के
इस मुखर खण्डहर में
पुनः क्या रह सकोगे?
ओ प्रवासी!
आज क्यों लौटे
बताओ
हो चुका जब
शेष सब कुछ!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ईमानदार प्रश्न

तुमने कभी अपनी आत्मा से
ईमानदार प्रश्न किये हैं?

कि
क्यों सुबह के सूरज की लाली
तुम्हें सिन्दूर की नहीं
रक्त की याद दिलाती है?

क्यों हाथ में पुस्तक लिये
पाठशाला जाता नन्हा
कल के कर्तव्य की नहीं
कल के उस क्षण की छवि आँकता है
जब तुम हठात्
उसके जन्म के कारण बने थे?

क्यों
सूखे से बुढ़ियाई धरती की
बेजान झुर्रियाँ
बिवाई-सी फटी उसकी छाती
तुम्हें मेहनत करने को नहीं
दान के धान से
गद्दे तकिये भरने को
कहती लगती है?

क्यों
अत्याचार से पिसी लाश
उसकी उधड़ी चमड़ी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

झाँकते घाव
तुम्हारे हृदय में
करुणा नहीं
उन घावों को
और कुरेदने का
पाशविक कौतूहल भरते हैं?

क्यों
अकाल हुई
जवान विधवा के श्वेत वस्त्र
सूने नयन
तुम्हें उसकी अन्तर्वेदना की ओर नहीं
उसके वक्ष के अरक्षित उभार
उसकी आलमारी के आभूषणों
की ओर खींचते हैं?

नहीं! नहीं!
तुमने अपनी आत्मा से
कभी ईमानदार प्रश्न
किये ही नहीं

तुम तो कभी न रुकने वाले
मिथ्या के अश्व पर चढ़ गये
उस पहले झूठ की धुरि से बँधे
असमाप्त घेरे में
निरन्तर दौड़ते हो

ईमानदार प्रश्न तो क्या
तुमने तो कभी
अपनी आत्मा के किये प्रश्नों के
ईमानदार उत्तर भी नहीं दिये।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छाया का छलावा

कौन लंगड़ा है
मगर गतिवान फिर भी?
कौन चल सकता
मगर लंगड़ा रहा है?
कौन इन बैसाखियों से आज पूछे :
पाप करता कौन?
जो पथ नापता है
या, जो कि लूले-स्वप्न
बाँटे जा रहा है?
कौन लंगड़ा है?

कौन लूला है
मगर कुछ गढ़ रहा है?
कौन है जो खिलखिलाता
हाथ थामे ध्वंस के?
कौन खोले मुट्ठियों को
और सोचे
भाग्य की रेखा दिखा कर कौन?
स्वप्न की भोली परी के
पंख नोचे जा रहा है?
कौन लूला है?

कौन अंधा है
मगर कुछ देखता है?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
कौन सब कुछ देख
अंधा बन रहा है?
कौन सूनी चौखटों पार जाये और देखे :
ज्योत्स्ना के स्रोत पर
कोहरा बिछा कर कौन?
ज़िन्दगी के जाम में
भर कर अंधेरा पी रहा है?
कौन अंधा है?

कौन जगता है
नयन में आस लेकर?
कौन सब की आस की
शैया बनाए सो रहा है?
नींद की नगरी में किससे कौन पूछे?
करुण क्रन्दन को
मधुर लोरी समझ कर कौन?
स्वार्थ की अट्टालिका में
राक्षसी तन्द्रा लपेटे सो गया है?

व्यर्थ ये सब प्रश्न
क्यों सब पूछते हैं?
एक छाया के छलावे से
वृथा क्यों जूझते हैं?
चाह कर उलझा दिया,
फिर क्यों पहेली बूझते हैं
कौन सोता, कौन जगता भूलकर
झाँकें हृदय में
और पूछें : जागता 'मैं' या
अभी भी सो रहा है?

(सरिता, मई 1974 में अंशतः प्रकाशित)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उदास सत्य

पतंगा
झुलस गया
बाती का मन
हुलस गया

पर हँसा कौन?

जिसमें
न शलभ-सी प्यास
और
ना बाती जैसी आस

सत्य
रखकर ठोडी पर हाथ
बैठा है चुपचाप उदास!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अकाल की प्यास

भुतही इमली के तले
अंधेरी राह चलते
अनजाने भय से
फटे से स्वर में
बस, चिल्लाते ही तो हो,
तुम्हारे भरे पेट को कहीं
वह अकाल की भूख
छू भी न जाय
बस, इसी डर से
सहायता का बेसुरा गीत
गाते ही तो हो।

अकाल, नाम भर
तुमने
बस, सुना ही तो है
देखा कहाँ,
और सुन कर ही
तुम्हारे आदर्श का ऐश्वर्य
दूर खड़े बालू के टीले में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धंसने लगा,
रात की महफिल का
रंगीन निमन्त्रण
और सुबह
देर से टूटी
नींद की उबासी का आलम
सूखी हवाओं के
भूरे जाल में
फँसने लगा।

तुमने जानी है
बस वही भूख
जो दोपहर दो बजे लगती है
और वही प्यास
जो रात आठ बजे जगती है,
तुम्हें क्या मालूम
अकाल की प्यास
कितनी दर्द भरी होती है!

मुझसे पूछो
ना, मुझसे भी नहीं
मेरी उस अंगुली से पूछो
जो जीवन के दीये की
लौ पर रखी है
जिसकी चर्बी
चटक कर बूँद हो
बाती में रिसती है,
इस इन्तजार में
कि कोई आये
दो बूँद ही सही

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पर आशा के तेल से सींच जाये
उस बुझती जलती बाती को।

वह बाती
जलने की आस लिये
बार-बार बुझती है,
पूछो, जरा पूछो
उस टिमटिमाते जीवन-सी
सूख रही बाती से,
अकाल की प्यास, सचमुच
कितनी प्यासी होती है।

(नवनीत, मई 1973 में प्रकाशित)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कठपुतली वाला

मेरे लम्बे सफर की साक्षी हैं
मेरी एड़ियों में फटी
बिवाइयाँ
उनमें सूखे रक्त में जमा
धूल का हर कण
दर्द का इतिहास
और कुछ नहीं मेरे पास

सर पर एक पोटली
उसमें सोई कठपुतलियाँ
मौन
शायद मर गईं भूख से
चेतना खोजता
उनमें प्राण फूँकने को आतुर
पर वे मरी ही रहतीं
निष्ठुर!

बाबू! मैं बहुत घूमा
नाचीं बहुत मेरी कठपुतलियाँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

थिरकीं बहुत मेरी अंगुलियाँ
पर अब
देखते हो
पत्थर तोड़ने से
आँटणें पड़ गईं
मन के भीतर कहीं
ऐंठनें जम गईं
धागा पकड़ता हूँ
अंगुलियाँ थिरकती नहीं
कठपुतलियाँ मचलती नहीं

एक पंसेरी अनाज कहाँ
एक खाट
और रंगीन चादर भी
मिलती नहीं
मेरे कलाकार को
दो हाथों बजी
एक ताली तक मिलती नहीं

मेरी यह भूख
मेरे पेट की नहीं
है इन कठपुतलियों के पेट की
अपनी भूख!
वह तो कर चुका भेंट
कला को नहीं
कला के संरक्षकों को
चंद आयोजकों को
संरक्षण का कर्ज चुकाते
मेरी कठपुतलियों का पेट
चुक गया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विशाल मंच पर
मख़मली पर्दा उठे
तो ये नन्हा कान्हा
हठ करता
मंच नहीं
चौपाल चलो
खाट के पीछे
मुँह से बाजा बजा
धड़कते दिल वालों के बीच
हमें नचाओ

पर नहीं
चौपाल पर भी
धड़कते दिल
अब नहीं मिलते
शायद सिनेमा
या फिर चले गए
पड़ोस के गाँव
स्वयं कठपुतली बनने
नाचने कोई छिछोरा नाच
बंध कर नेता की डोरी से

बहुत भटका
अन्त में
पत्थर तोड़े
जुट गया
कठपुतलियों का मन छोड़
अपना पेट भरने
तभी से ये रूठ गईं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं अब भी
मनाता हूँ इन्हें
ढूँढ़ता हूँ सच्चे तमाशबीन
जो हँस दें
तालियाँ बजा दें
मेरी सोई कला को
जगा दें

इस इतने बड़े
आबाद देश में
कहो तो बाबू
बस दो ही चार
तमाशबीन
कहाँ मिलेंगे?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh,Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मज़ार पर

मृत्यु ताने बुन रही है
मित्र!
मत स्थिर रहो।

फूल कितने ही चढ़ा लो
वेदियों पर
गंध बासी ही रहेगी
या कि घाटों पर जगा लो
प्रार्थनाएँ
रुदन बन कर
गूँजती रह जाएँगी।

ज़िन्दगी की यह डगर
जो बँट रही पगडण्डियों में
थम गए तो
कौन धोएगा कहो
अभिशाप जग के?

सत्य की जो टिमटिमाती रेख
जलती है हृदय में
आँधियों से
कौन रक्षा कर सकेगा?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वो नहीं
जो सो रहे हैं
इन सजी-सँवरी मज़ारों में
वो नहीं
जिसको जगाने के लिए
घण्टियाँ दिन-रात बजती मन्दिरों में
वो नहीं
जिसको सुनाने के लिए
रोज़ मस्जिद से अज़ानें दे रहे हैं।

मित्र, ये सब स्वर
स्वयं अपने लिए हैं
नयन खोलो चेतना के
सत्य के पथ पर बढ़ो
बस यही है दान
स्मारक भी यही है
राह चलते जो पथिक
बलि हो गया
आखिरी उसके चरण पर
क़दम रख दो
प्रथम अपना।

मृत्यु ताने बुन रही है मित्र!
मत स्थिर रहो।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बोलती दीवारें

चूने की दीवार में
लोहे की कीलों पर
लकड़ी का आला
और उस पर टिकी
दो कांच की शीशियाँ
उधर,
और इधर
इस मेज़ पर
कुछ कापियाँ, कुछ किताबें,
कुछ कलमें
और भी बहुत सी
बेज़ान चीज़ें
बेतरतीब धरीं।

बस यही भर देखा तुमने
और इन सब के बीच
जो एक भराव है
वह कहाँ देखा
इन्हीं के बीच
जो एक अभाव है
वह कहाँ समझा।

नहीं, तुम अंधे तो नहीं
पर सच पूछो तो तुम्हारे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आँखें भी कहाँ हैं
तुम बेजान में जान तोलते हो
बेजान में जान नहीं घोलते
वरना वे बेतरतीब भी बोलते।

दीवारों के कान होते हैं
इसलिए हम न बोलें,
न बोलें!
पर क्या हम नहीं सुनते
इसलिये दीवारें न बोलें?

नहीं, यह नहीं होता
वो जो सामने एक छेद है
एक कील की
और फिर एक चित्र की
कहानी कहता है
एक चित्र
जिससे जुड़ा था एक व्यक्ति
और उस व्यक्ति से जुड़ी थी
एक भावना
जो अब नहीं रही
दीवार फिर भी कहती है
हम सुनें, न सुनें।

अपने में सिमटना सुख है
अपने को समेटना नहीं
दीवारें सूनी हैं
इसलिये नहीं कि वे
सचमुच सूनी हैं
इसलिये कि हम सूने हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जीते क्षण

जो बीते तुम्हारे पास
उन क्षणों की
वह अपूर्व सुवास
अब भी मेरे पास।
कैसे कहूँ
कि वे क्षण बीत गये
वे क्षण तो
जीत गये।
वे क्षण ही बीते हैं
जो तुमसे रीते हैं
विधि ने यह अन्तराल
तभी तो दिया
कि मैं अमर न हो जाऊँ।
तुम्हारे पास बीते क्षण
बीतते नहीं
जीतते हैं
विधि को
विधि के विधान को।

(नवनीत, मई 1978 में प्रकाशित)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ओ बड़े आदमी

मैंने तो कभी
तुमसे वह नहीं माँगा
जो तुम्हारा है
फिर तुम्हें
मेरे उस अपने से
ईर्ष्या क्यों
जो मेरा
बस मेरा है।

मुझे बस एक स्वर चाहिये
और तुम्हें
नारों का कोलाहल
मुझे सुख का बस
एक क्षण चाहिये
और तुम्हें
सुख के लिये हर पल।
तब फिर
मेरे एक स्वर से क्या होगा
मेरे एक क्षण से क्या होगा
फिर भी तुम्हें

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरे उसी एक क्षण को
छीनने की चिन्ता है
मेरे उसी एक स्वर को
घोट देने की लालसा।

पर यह नहीं होगा
ओ बड़े आदमी!
तू बड़ा है पर रीता
मैं छोटा हूँ पर भरा।

तेरा आकाश
शायद विशाल है
पर तू उसकी तुलना में
बड़ा छोटा
और मेरा आकाश
छोटा सा
पर उसकी तुलना में
मैं बहुत बड़ा।

मुझे छूकर
तू शायद भरे
न भरे
पर मैं तुझे छूकर
रीतता नहीं

ओ बड़े आदमी!
तू मुझसे
मेरे सुख से
जीतता नहीं

(साप्ताहिक हिन्दुस्तान, 9.4.1978 में प्रकाशित)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

झटक दो कंधा

माना कि तुमने नहीं
किसी और ने धरी
तुम्हारे कंधे पर की गठरी
हैं कंधे तो तुम्हारे

कैसी यह विवशता
निकाल भी नहीं सकते
गठरी के नीचे से
अपना ही कंधा

ढो रहे चुपचाप
किसी और के पाप का बोझ
अबला की तरह
बस चुप हो रो रहे।

पेट की भूख
क्या इतनी बड़ी है
या कि तुम्हारा प्रमाद
बड़ा है उस से भी?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शर्म यह नहीं
कि तुम बोझ से लदे हो
बल्कि यह कि
तुम्हारे कंधों में
झटक देने की
इच्छा नहीं
कहते हो शक्ति नहीं

यह असमर्थता
दी नहीं किसी ने
स्वयं ओढ़ी है तुमने।

बोझ धरने वाला
कहता रहा
बस थोड़ी दूर और
तुम कहते रहे
रे दुष्ट! बोझ उतार

उसकी भलमनसाहत
कहने भर की
तुम्हारा आक्रोश भी
बस कहने भर का ही।

बुरा न मानो तो कह दूँ
दोष उसका कम
तुम्हारा अधिक
वह बस तुम्हारे कंधे पर
रखता है बोझ
तुम चुप रहकर
प्रोत्साहन देते

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह और भी कंधों पर
रखता रहे बोझ।

झटक दो कंधे
पटक दो गठरी
गठरी के साथ
गिर पड़ों तुम भी
तो ग़म न करना

तुम उठो न उठो
अनुचित के विरोध की
इच्छा उठेगी तुम्हारी
प्रतिबिम्बित हो
कंठ कंठ में गूँज
एक आँधी बनेगी
बस वही आँधी
माँगता है देश
अपनी ही मत सोचो
सब की सोचो
आज की ही नहीं
कल की भी सोचो।

हाँ!
झटक दो कंधा
पटक दो गठरी!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आह्वान बदलना होगा

हमने आँखें खोलीं तो
वो सपनों की दुकान
बढ़ा कर चले गये

ये जिनको कल
गद्दी पर बैठाया है
देखो तो
क्या रखते सूनी टाँडों पर

ये भी शायद
सपने ही रख देंगे

हम फिर अपने हाथों में
लेकर खून-पसीना
वैसे ही सपने खरीदते जायेंगे
और किसी दिन लुट-पिट कर
फिर जागेंगे
व्यापारी ये नये
चले जायेंगे हमको छलकर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अभी बदलना चाहो तो
सामान बदल सकता है
ये जो बेचें
वही ख़रीदें हम
यह नहीं जरूरी
हम जो चाहें
वह यह बेचें
ऐसा कुछ करना होगा

इनके बदले
नहीं बदलता कुछ भी
हम अपनी माँगें बदलें
चाहें बदलें
राहें बदलें
इनको अपने आप
सभी सामान बदलना होगा

दोस्त समय है
सोचो ही मत केवल
करके तो कुछ देखो
पहले इन्हें बदलने से
खुद हमको
अपना आह्वान बदलना होगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आस्था

देवता!
मैंने तुम्हारी मृत्यु को देखा है
हर पुराने पत्थर की दरार में
हर नये रिवाज के उफान में

आतताई की ठोकर से
लुढ़के तुम
बिखर गये
किसी शास्त्रार्थ के डर से सहम
नये रूप में
भेष बदल निखर गये
कितने असहाय हो तुम

देवता!
मैंने तुम्हारी मृत्यु को देखा है
देहरी पर
हर पुराने मन्दिर की
नींव में
हर नये भवन की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भक्तों की कुंठा
भर गई
कितने विकार तुममें
धीरे-धीरे क्षरित हो
चुपचाप मिट गये तुम
कहते हैं सर्वशक्तिमान
पर सच में
कितने निरुपाय रहे तुम

देवता!
मैंने तुम्हारी मृत्यु को देखा है
कई बार देखा है
पर आश्चर्य
कि मेरी आस्था
फिर भी रही है ज्यों की त्यों
मैं मनुष्य
बहुत मानता हूँ
तुम्हारे नये रूप में
तुम्हें अब भी
दिल में सच्चा जानता हूँ

सोचता हूँ
यह अक्षुण्ण आस्था
जीवित है शायद इसलिये
कि वह
तुम्हारे ध्रुवत्व पर नहीं
टिकी है
सतत परिवर्तनशीलता पर
अटूट सहिष्णुता पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरे बदलने के साथ
तुम भी बदल जाते हो
पर मेरे मरने के साथ
मरते नहीं
चोला भर बदलते हो

हाँ, देवता!
मैंने तुम्हारी मृत्यु को देखा है
पर साथ ही
देखा है
तुम्हारा हर नया जन्म भी
तभी तो
तुम्हारी मृत्यु
शून्य देती नहीं
कोई नया शून्य भरती

टूटी मूर्ति
एक इन्सान के ज़मीर से
उभरती
एक नया रूप ले
दूसरे इन्सान के ज़मीर में

देवता!
मैंने तुम्हारी मृत्यु को देखा है
और देखकर ही समझा है
तुम्हारे पास मृत्यु आती है
पर तुम नहीं
वह मरती है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

महानगर का दिन

महानगर का यह दिन
लगता है जैसे पलछिन

जीवन
पर ठिठका-सा
संभला फिर भी बहका-सा
आदमी-सा दिखता जानवर
जानवर के भीतर का आदमी
बस झिझका-सा
किसी का हाट में घर
किसी का घर ही हाट
हर भाव सिसका-सा
बस केवल सिक्कों की
खन-खन-खन
महानगर का यह दिन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भीड़ पर झुकी
थकी-हारी उदास शाम
पीठ पर
दिन की हो या रात की
सवार है काम
बस केवल काम
नाम भर का काम
नसों के तारों पर
निरर्थक थकान की मिजराब
झन-झन-झन
महानगर का यह दिन

हाड पर मांस की
चंद चिंदियों वाले
पेट की भूख
और आस की प्यास
बचे-खुचे आदमी
जानवर बनने के पास
चेहरों पर झूठी चमक
पर कहीं नहीं सुन पड़ा
सुख का उन्मुक्त हास
दूर जाती टम-टम की
घण्टी का डूबता स्वर
टन-टन-टन
महानगर का यह दिन
लगता है जैसे पलछिन।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खण्डहर

देखो
उस मन्दिर का कलश
गिर गया
कंगूरे ढह गये
रह गये अब तो बस
खण्डहर

मूक प्रतिमा
आज भी बैठी
सिर पर छत्र नहीं
मकड़ी के जाले
बरसों हुए
दूध में पखाले
न चन्दन पुता
न वरक ही चढ़े

जिस दिन मरा
वह बुड्ढा पुजारी
उत्तराधिकारी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुजारी न रहे
स्वयं बन गये देवता
देवता को कौन पूजता

शायद तभी से
एक और पीठिका
मूर्ति के आगे आ गई
पुजारी की सन्तति
प्रतिमा के आगे
धीरे-धीरे छा गई

भगवान के भक्त तब
हो गए जजमान
पुजारियों के भी पुजारियों के
पूजा के घण्टे
इन्हीं के बजाये बजते
ये पुजारी सभी को छलते

प्रतिमा को कौन धोकता
लोग तो अदा करते
मन्दिर आने की रस्म भर
घण्टे सुनते
कीर्तन गाते
मन्नत मानते
प्रसाद में जो भी मिला
लेकर लौट जाते

भूलकर भी
प्रतिमा को खोजा
जिस जिसने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निकाला गया
मन्दिर के बाहर
मन्दिर में
भक्तों से अधिक
भगवान हो गये
वास्तु ऊपर से भारी
नीचे से हलकी हो गई

और तब
बाहर की भीड़
भीड़ का हल्ला
हल्ले की गूँज
गिर गये
मन्दिर के कलश
कंगूरे ढह गये
पुजारियों की जमात के लोग
भीड़ की लहर में बह गये

अब मन्दिर में भीड़
भगवान खोजने वालों की
नये पुजारी
मूर्ति साफ करने में जुटे
भक्तों की भीड़
नये जोश से
दर्शन को आतुर

मैं
भक्तों की भीड़ में
राह देखता हूँ
मूर्ति को ढके जाले

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
उसके आगे धरी
विशाल पीठिका के हटने की
और तोलता हूँ
नये पुजारियों की मेहनत
उनकी लगन

बरसों के जाले
ढेरों धूल हटने में
लगता है समय
मेरे मन में
जागता है भय

टिक जाती है
नये पुजारियों में
किसी-किसी की नज़र
उसी पीठिका पर
देख उस दृष्टि में
छाया लालच की
हो जाती है बलवती
फिर वही एक आशंका
मेरे मन की।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किरण

वो जो किरण
अम्बर से भेजी तुमने
उतर पड़ी झील में
शैवालों उलझ गई

तुमने ही झील रची
तुमने ही किरणें
फिर क्यों शैवाल बुने
किरणों को ठगने

भूल गये तुम शायद
मेरी अभिलाषा ने
कब माना
शैवालों को प्रहरी

देखो तो वही किरण
अम्बर से भेजी जो तुमने
अन्तर में
उतर गई गहरी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उगते ही रहना होगा

कल तक जिसके आतंकों को
प्रतिदिन कोसा करते थे
आज समय के
उसी निर्दयी झोंके में
ढूँढ़ रहे अच्छी बातों को

क्रूर जानकर
जिस चेहरे पर
कालिख पोती
अब उसमें भी
आदर्शों को खोज रहे

भरी दोपहरी
बीच शहर में
जो कल ही
नीलाम हुए थे
आज ज़मीरों के
बिकने को
तर्क दे रहे

भला लगे जब वह युग
अब जो बीत गया
और अधिक गूँजे जब
स्वर उस घट से ही
जो रीत गया

तब जानो उस अंगारे पर
परत राख की जमा हुई

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

चिंगारी जो आग लगाने आई थी
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
वह धुआँ हुई

दोस्त जवानी की
कस्तूरी साँसों को
अग्नि-ज्वाल सा
पुनः धधकना होगा

कोंपल धरती फोड़ उगे
तब उगना चालू ही होता है
उतना सा उगकर इठलाने लगे
बीज तब खोटा है
या माटी में
धूल भरी है
पानी में कुछ खारा है

खारेपन को धोने की
जब लगन नहीं
माटी को ऊसर करने का
जतन नहीं
तब आँगन के गमले को
धरती से अच्छा
कहने से क्या होगा

धरती फोड़ उगे भर हम तो
काम नहीं पूरा होता
जब तक पत्तों की छाया से
अंग धरा का ढाँप न लें
तब तक हमको
कसम धरा की
उगते ही रहना होगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनाथ सत्य

ईमानदार धूप
मेहनती हवा को
तरस जाय
दूसरों की नीयत से उलझ
अपनी नियति
बदल जाय

अँधेरे बन्द कमरे में
घुट कर मर जाय
या किसी सुनसान में
किसी हैवान के हाथों
निरीह बच्चों सा मारा जाय

खुली धूप में
हँस कर खिलना न सही
खुली हवा में
मर पाने का सुख भी नहीं

क्या आदमी
इसीलिए जिए जाता है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कि आदमियों को मापता रहे
या मरते देख मुँह मोड़ता रहे

पूछो, जरा उनसे पूछो
जिनकी देशभक्ति
क्रान्ति के नाम से चल
कुर्सी तक जाती है

जिनकी दृष्टि
आम आदमी से छिटक
विरोधी दल तक जाती है

और इस यात्रा में
सत्य अनाथ सा
काफिले से दूर
खड़ा एक किनारे उदास

हर गुज़रते दौर से
माँगता है
साथ लिए चलने की भिक्षा

और कहता है :
खेत का धान
आदमी का चेहरा
तभी खिलेंगे
जब मिलेंगे
उसकी नियति को न्याय
और नीयत को शिक्षा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ठगा गाँव

गेहूँ की बाली पर
बादल की परछाईं
छपरे की छांव तले
उदासी घिर आई

तपती बालू पर से
तिनके दो-चार
चरते न चरते
गाय के नथुने झुलसे

सपनों के हाथों पर
कितने ही छाले उपसे

प्यास
कांच की चूड़ियों-सी
चौखट के पार निकल
रेत की लहरों पर
तड़क गई

अंचल की तरुणी
नाचती उमंग-सी
आँगन में मुरझाई

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सावन

कितने ही बीते
वह भटक रही दर-दर
दो बूँद पानी को
जोबन तरस गया
बादल भी गाँव छोड़
शहर पर बरस गया

भगवान भी हमें
छोड़ गया
आदमी के तरस पर

वादे बस वादे
खुशहाली के
सुख के
शिक्षा के
कानून के
वादे ही वादे

रह गये सभी
योजना के काग़ज़
सादे के सादे

कब से कितनी बार
काग़ज़ पर बनी—मिटी
शहर से वह सड़क
ढाणी तक फिर भी
अभी नहीं पहुँची

नेता से माँगा था
एक मास्टर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बच्चों को सिखलाता
सभ्य की तरह जीना
हमारी-तुम्हारी
देश की
अपनी भी इज्जत करना

और माँगा था
एक दरोगा
पैसे पर बिके नहीं
निरीह के कंधे पर टिके नहीं
गाँव की गोरी देख
हवस नहीं हया जगे

न दरोगा मिला वैसा
न मास्टर
हम वैसे ही रह गये
ठगे के ठगे

एक बार फिर
वादों की हवा आई
कई बार टूटे सपनों ने
फिर से ली अंगड़ाई

हाँ! फिर घिर आई
गेहूँ की बाली पर
बादल की परछाईं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रीते लोग

जब कहा
यही कहा :
उसने कुछ नहीं किया
या फिर
उसने जो भी किया
गलत किया

कभी यह नहीं सोचा :
तुम यह करो
कि ऐसे करो
या कि आओ
हम-तुम मिल
यह ऐसे करें

बोलना मना था
तब चुप थे
बोलने मिला तो
बस दे रहे गालियाँ

कितने गये-बीते हैं
वो – हम – ये
शायद सभी
कितने रीते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रिवाज़, अहसास और उम्र

सुहागन की अर्थी
जवान हो या बूढ़ी
लाल कफन से सजती
अहसास का रिवाज़ नहीं
यह रिवाज़ में बचा
थोड़ा सा अहसास है

अहसास
सुहाग को
माँग में सिन्दूर भरने का
रिवाज़ भर नहीं
मन के भीतर
सहज सुख से उभरी
सिन्दूरी लहर मानता है

रिवाज़
और उससे बंधा आदमी
लाल रंग के पीछे
भागता ही रहता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

सूख कहीं राह में
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
कुँआरा धरा रहता

वासना बूढ़ी हो जाय
प्यार पर झुर्री नहीं चढ़ती
रिवाज़ माने न माने
चाहे न चाहे
प्यार से सिंची उमंग की
उम्र नहीं बढ़ती

प्यार एक फूल है
करोड़ों वर्ष बूढ़ी
चट्टान की दरार से भी
झाँक लेता
अभी-अभी भींगी
मिट्टी से भी फूट पड़ता
बाधा को मानता नहीं
रिवाज़ से पूछता नहीं

रिवाज़ रोना सिखाते
फूल हँसते ही जाते
रिवाज़ों की धूल से
अहसास की आँधी
रुकती नहीं
रिवाज़ उड़ जाते

जवान गुलाब हो कि बूढ़ा कनेर
खिलती कली कभी नहीं रोती
उम्र का तकाज़ा न दो अय दोस्त
अहसास की उम्र नहीं होती।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मार्ग के खड्डे

उस मार्ग पर
जहाँ कृष्ण चलते थे
खड्डे अवश्य रहे होंगे
उन्होंने पाटे भी अवश्य होंगे
क्योंकि उनका रथ
चलता रहा
उनके हाथ का
सुदर्शन चक्र भी
चलता रहा

मार्ग पर
आज भी खड्डे हैं
हम पाटते भी हैं
हर रोज अधिक मेहनत से
पर खड्डे पाटे नहीं जाते
शायद खोदने वाले
मारे नहीं जाते

खड़े ही रह जाते हम
समय
रथ-सा आगे बढ़ जाता
सुदर्शन चक्र
हमारे हाथ का
चलता नहीं
भटक जाता
सुविधा के बियाबानों में।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्रान्ति और आदमी

एक वैभव खोजता है
खण्डहरों में
एक मरघट की चिता से
राख ले
पुतले बनाता

एक तोड़े जा रहा
पत्थर मज़ारों के
एक चुनकर मोरियों से ईंट
चौबारे सजाता

क्रान्ति का झण्डा उठाये
चढ़ गया अट्टालिका पर भ्रान्ति की
और ऊँचा बैठ छज्जों पर
वही झण्डे चबाता

और वो जो रात-दिन
जलता रहा है लकड़ियों-सा
रोटियाँ पकते न पकते
देख पकती उम्र को
आँसू गिराता

आदमी के नाम पर
लाशें बची हैं
दौड़ता तो है रगों में खून लेकर
क़त्ल होने पर मगर
पानी बहाता।

पोइट्री सोसाइटी (इंडिया) द्वारा 1993 में प्रकाशित
पुस्तक 'सार्थक कविता की तलाश' में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आदम की सन्तान

झाड़ी में घोंसला
डालों पर बिल
पीठ में आँखें
पेट में दिल

आदम ने कब सोचा था
उसकी सन्तान
एक दिन ऐसी होगी
पर उसने
यह भी कब सोचा था
उसके नियन्ता की नीयत
एक दिन ऐसी होगी

मन में पत्थर
मन्दिर में मूरत

आदम तो बीत गया
नियन्ता भी रीत गया

आदि को छोड़
इति से गठ-जोड़
आदम का बच्चा ही
अन्तत: जीत गया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कलाकारों के प्रति

रंग भर रहे कुछ
जीवन की हर सूनी पगडण्डी में
जहाँ हवस से अंधे पशु ने
ख़ून उंडेला
मानवता के घाव कुरेदे
अट्टहास में ही डूबा है क्रन्दन
तब से अब तक।

कुछ पत्थर को काट-काट कर
प्राण भर रहे
प्राण लिये जो जन्मे
उनका पत्थर में ढल जाना
जिनको रुचा नहीं
अपना चेतन कर विराट
वे जगा रहे हैं कण-कण
तब से अब तक।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छन्दों से कुछ सजा रहे
उन वीरानों को
आदम के बेटों ने जिनमें
बेतरतीब उदासी बोई
और फसल भी काट रहे हैं वे ही
तब से अब तक।

कुछ गीतों में बाँट रहे हैं
दर्द तुम्हारा
घुटा-घुटा जो रहा
तुम्हारे सीने में
अधरों पर खुलकर खिलने का
हो न सका है साहस
तब से अब तक।

थिरक-थिरक कर धरती पर कुछ
अम्बर तक को रिझा रहे
झंकारों का ताना बुन कर
बाँध रहे हैं कुछ अनन्त को
अपना तन-मन भूल
भर रहे बाहों में वे दिग्दिगन्त को
सौंप रहे जन-जन को सब कुछ
भर अपनी कृतियों में
तब से अब तक।

कैसी अद्भुत रीत जगत की
बदले में कुछ दे न सका
वह कलाकार को
मन बहलाने का साधन
या वैभव के महाग्रन्थ का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

एक पृष्ठ भर कह कर
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
सब कुछ भूल गया।
और कचोटा जब भी मन में
तभी कहा :

भूख प्यास के बिना कला का
जन्म नहीं
कलाकार जल-जल कर होता राख
निखरती तभी कला

शर्म छुपा ऐसे शब्दों में
जीत-जीत जीता समाज
पर
कलाकार की दृष्टि रही है
प्रश्नचिह्न-सी सूनी
तब से अब तक।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by MoE-IKS-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समय की व्यथा

व्यथा
समय की न हो
जो बीत गया
केवल उस की
जो रीत गया
ताकि कल सँवरे
और हम नहीं
समय कहे हमारी कथा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुस्कानें गिननी होंगी

एक फूल के
खिल पाने से
टूट-बिखर जाने तक में
जो उम्र बीत जाती है
उसे
समय की जड़ सूई हो
या कि काल की
समयामी गति
कहाँ नाप पाती है

उसे समझना हो तो
मुस्कानें गिननी होंगी
और बटोरे जायेंगे
उपहार सुरभि के
जो खिलने से
मुरझाने तक
मलयानिल को भेंट किये थे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सौरभ पर मँडराते भ्रमरों का
गुँजन गीतों बुनना होगा
और
पंखुड़ी पर बिखरे
नन्हे मोती
पलक पाँवड़ों
हौले से चुनना होगा

यादों की पगडण्डी पर के
पदचिह्नों को गिनकर
भावों की लहरों पर उछले
थमे हुए क्षण चुनकर
मन की गति ही चाहे तो
वह उम्र नाप पाती है

एक फूल के
खिल पाने से
टूट-बिखर जाने तक में
जो उम्र बीत जाती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अमर बेल

गुलाब - जूही - चम्पा - चमेली
कंटीली कोई
झाड़ी बबूल की
उगती हैं इसी माटी में
एक साथ
जैसे कभी पहले
वैसे ही आज

गुलाब के काँटे
चम्पा को छू जायें
दूध-सा बहे भी तो
चम्पा मरता नहीं

बबूल की हवा
जितनी ही तेज हो
जूही का फूल
एक भी
मुरझाता नहीं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चमेली के फैले
बंजारी झाड़ी को
छोटेपन का अहसास
कभी होता नहीं

सतरंगा चमन
हर महक का
खिल जाने पर फूल को
माटी की जात का
आभास रहता नहीं
फिर भी मुरझाने लगे
ये पौधे झरने लगे

किसी ने मचा दिया शोर
गुलाब चम्पा को खाता
बबूल जूही को
उस नन्ही झाड़ी को
चमेली धकेले जाती

सभी को खाती
रह गई अनदेखी
एक अमर बेल

फूल अभी महके हैं
शोर से बहके हैं
सभी भरमाये
आपसी गुस्से से
दहके हैं

हाँ! बगिया के माली
बगिया बचानी है

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

तो अमर बेल काटो
जिसकी जड़ नहीं
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
पौधों की जड़ से
बना खून
पत्तों से टहनियों से
चूसती जाती है
फैलती जाती है

पौधे नहीं
काट फेंको
यह अमर बेल
बढ़ती ही जाती।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुशासन : एक अनुमान

छोड़ो महाप्रभु! छोड़ो
इस बेचारे आदमी पर
जबरन थोपे बंधन
तोड़ो

मुक्ति की मृगतृष्णा का लोभ
मकड़ी के जाले जैसे भोले
आकर्षक उलझे से वितान
आपके दिये जर्जर विधान
और यह
अनुशासन से मुक्त नहीं होता
दम घुटता है
पर प्राण नहीं छूटा

आपके बाद आपका चेला
इसके बाद इसका बेटा
यों ही
कभी मकड़ी कभी जाला
भोली धरती के
भोले से आदमी को
आदमी के बनाये देवता के
स्वत: बने पुजारी ने
आदमी से जानवर बना डाला

अनुशासन
जहाँ का तहाँ
वेदी पर धरा रहा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

छोड़ो महाराज! छोड़ो
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
इस अदने आदमी पर लादा
कर्ज का बोझ
तनिक ख़ुद भी तो ओढ़ो

भविष्य के नाम पर ख़ून लिया
और तब
अनुशासन के नाम पर
ख़ून किया

यह ख़ून की यात्रा
अदने आदमी से आरम्भ हो
सत्ता के बियाबानों घूम
फिर अदने आदमी पर ही
खत्म होती रही

आप अछूते ही रहे
ख़ून से भी
अनुशासन से भी

आपने बनाये नियम
पालन करने पड़े इसे
इसने तोड़े तो यह मरा
आपने तोड़े तो भी यह मरा
पाप का घड़ा
फिर भी न भरा

छोड़ो महापुरुष! छोड़ो
यह अनुशासन की चर्चा
बस यहीं छोड़ो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुक्त हो बाहर आओ
देखो अनुशासन
सूरज का चाँद का
हवा का फूल का
देखो बड़ का पेड़
और हरी दूब
देखो ये मौसम
ये दिन-रात सुबह-शाम

आपकी बात नहीं जानता
पर मुझे तो नहीं भाता
कारागाह या कब्र-सा
अनुशासन

जी! मुझे गुदगुदाया अट्टहास
कभी नहीं रुचता
मुझे भली लगती है
तथागत की
वीतराग की
सहज स्मित
जैसे खेलकूद कर
थक कर सोये
शैशव की मुस्कान

पर आपको
शायद रास नहीं आये
अनुशासन का
मेरा यह अनुमान!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निस्तब्ध चेतना

जागने पर तो
दिशाएँ कौंधती
उस एक कण से
देख पाने में जिसे हर दृष्टि हारी,
आदमी का दर्द अणु-सा सूक्ष्म है
किन्तु उसमें
सिमट आती सृष्टि सारी।

जो धरा पाषाण
कितने ही युगों से
वेदना का वेग छू
हर बार ही तो गल गया,
हर बिखरता कण
सिमट कर
चेतना के नाद में
नित नये आकार लेकर
ढल गया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पेट की हो
या कि मन की भूख हो
पंथ हो निर्माण का
कल्याण या निर्वाण का
पग उठे तो
बीज बोये जा सकेंगे
थम गये तो
बज उठेगा शंख
चिर-प्रस्थान का।

यदि रहे निस्तब्ध
तब फिर चेतना से
ब्रह्म कैसे जग सकेगा?
और जब बँध कर रहे
तो वेदना से
गीत कैसे बन सकेगा?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ज़िम्मेदारी

आजकल कमरों में
ऊब भरी रहती है
ज़िम्मेदार लोग नहीं फिर भी
ज़िम्मेदारी के बोझ से
कूब बनी रहती है
कूब यों
कि ज़िम्मेदारी निभाते नहीं
बस बोझ से दबे जाते हैं।

वादों की नींव
संवादों की दीवारें
अतीत-अनागत के खंभों पर
वर्तमान की छत का बोझ
अतीत खिरता
अनागत दरक जाता
छत के नीचे बस
खालीपन ही रह जाता।

जी हाँ! कमरे में ऊब
लोगों में कूब
और इस निर्माण के बीच जड़ी
एक खूबसूरत टाइल
मेज़ पर रखी
ज़िम्मेदारी की फाइल।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सत्य कभी सोता नहीं

दो कान
दो आँख
एक दिमाग़ लिये आदमी
सुनता नहीं
देखता नहीं

कभी यह सब हो भी तो
मुँह से बोलता नहीं

फिर भी निराश हो
सत्य कभी रोता नहीं
कभी सोता नहीं!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यथार्थ

दर्पण की दरक
चेहरे की नहीं होती

ठीक वैसे ही
जैसे
चेहरे का धुँधलका
दर्पण का नहीं होता

वैसा समझने से
धुंध का हटना नहीं होता

पोंछ कर तो देखो
दर्पण पर की धुंध
कहीं चेहरे की तो नहीं

पर नहीं
ठिठका निर्णय
कुछ इंगित करता है

कहीं ऐसा तो नहीं
कि सहमे हो
अपने ही यथार्थ से

दर्पण पोंछो
और धुंध न मिटे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुराना प्रश्न

वर्षों पहले
एक प्रश्न पूछा था मैंने
आज देखता हूँ
वह प्रश्न
खड़ा है वैसा ही
चौराहे पर।

वो एक आदमी
दुविधा में जो जन्मा था
अब भी ज्यों का त्यों
खड़ा हुआ है
दौराहे पर।

अदने से आदमी
चन्द अदनी-सी ज़रूरतें
बस के अड्डे पर
या रेल के स्टेशन पर
लावारिस पड़े हैं।

व्यवस्था का प्यादा
दुत्कारता है आज भी
सन्तोष यही भर
कि पहले कभी
व्यवस्था विदेशी थी
आज स्वदेशी है
अपनी है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
अपने अधिकार के लिये
किससे लड़ें
जिससे लड़ें
वह अपना है
जरूरत के लिये
किससे कहें
जिससे कहें
उसे पाना
सपना है।

व्यस्त है वह
समस्याओं की चिन्ता में
जो महत् हैं
देश की
देश के करोड़ों की
और
गौण है यह बेचारा
अपने घर में बंजारा।

बहुत आये
बहुत चले गये
बहुत सी पगडण्डियाँ
बनीं राज मार्ग
वह प्रश्न फिर भी
चलता रहा
ऊबड़-खाबड़ राहों पर
ठोकरें खाता
अँधेरे में टटोलता
खड्डों में गिरता
चलता ही रहा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उत्तर आया
कई बार आया
आता रहा
जाता रहा।

कभी बड़ी-सी गाड़ी में बैठ
मुस्काता हाथ हिलाता
पास से निकल गया
कभी वायुयान में बैठ
बहुत दूर चला गया
प्रश्न औचक था
औचक ही रह गया।

रौंदा गया तो
उत्तर भाषण में खो गया
बाढ़ में बहा तो
उत्तर मुआयने पर
शायद सैर को
निकल गया
दुर्घटना में कटा तो
उत्तर मुआवज़े में
सिमट गया
भूखों मरा तो
उत्तर वादों में हँसने लगा

अकाल पड़ा तो
उत्तर राहत बन
बड़ी जेबों में
चुपके से जा छुपा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

हर उत्तर देने वाला
अपने निजी प्रश्नों के उत्तर
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
बटोरता रहा

कोई यह नहीं बता सका
कि देश में राज्य में
जिले में शहर में
कस्बे या गाँव में
सड़क की धूप
या ठूँठ की छाँव में
कहाँ है स्थान
इस अदने आदमी का।

व्यवस्था की सीढ़ी पर
वह कहीं बीच में है
सबसे ऊपर
या सबसे नीचे
या कि कहीं भी नहीं
सुविधानुसार हर कहीं।

पर लगता है
हर प्रश्न महत् है
इस प्रश्न से
तभी तो
वह प्रश्न आज भी
कंकाल-सा खड़ा है
चौराहे पर

एक प्रश्न
जो पूछा था मैंने
वर्षों पहले।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ताज़ा हवा

छोड़ो बासी बातों की चर्चा
और कभी कर लेंगे
आज समय को थम जाने दो
और दरीचों से झोंकों को
हौले-हौले आने दो

जाले वे जो
मकड़ी कल की छोड़ गई है
कोनों में कमरे के बुढ़िया
कीलें ठोक गई है
टाँडों पर जो धूल जमी है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

और सील की बदबू
जिससे
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
सदियाँ घुटी हुई थीं
एक हवा के झोंके के
आने-जाने से
कुछ तो बासीपन टूटेगा
और हमारी मुक्त हँसी से
दीवारें गूँजेंगी

जितनी देर रहेगी प्रतिध्वनि
प्यार भरे गीतों की
उतनी देर झरेंगी शायद
दीवारों से पर्तें

इसीलिए
आओ ना हम-तुम
प्यार करें
बासी बातों की चर्चा
अब और कभी कर लेंगे
आज समय को थम जाने दो
और दरीचों से झोंकों को
हौले-हौले आने दो।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उम्र

पूजा की थाली का फूल बने
या फिर गूंथ दिया जाये
मीठे सम्बन्धों की वरमाला में

उम्र सुबह से दोपहरी तक
या कि द्वार से सेज तलक हो
चाहे छोटी
पर मीठी हो

गुलदस्ते में सजे फूल की
उम्र अधिक है
किन्तु
सजावट भर की ही तो
या कि सराहे जाने तक की

नहीं! नहीं!
वह सुथरापन
लम्बा हो
जीवन्त नहीं

जीवन
बेल लगे फूलों-सा
थोड़ा हो
पर महक भरा हो
और
महक के खोजाने पर
बन्द पलक हो!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छूने की वाँछा

देह बड़ी साफ है
छूने भर से
मैली नहीं होती

मन भी बड़ा साफ है
पर मैला हो जाता है
छू लेने की वाँछा भर से

हाँ! तभी तो
मन को सँवारें
मात्र देह को नहीं

कि उसे न छू लें
जिसे छूने की
इच्छा भर से
मन मैला हो!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रकाश का स्रोत

महाशून्य सा अंधकार
जो लील रहा
हर ज्योति पुँज को
कहीं रहा होगा उद्गम
उसका मन के ही भीतर

कभी-कहीं जाने-अनजाने
रोप दिये जो बीज
तिमिर के
भूल गये
नन्हा-सा कह कर
वही समय की
पगडण्डी पर
फैल रहे हैं
सर्वग्रसा हो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

कभी किसी एकान्त समय में
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
जागा हो कोई आकर्षण
और देह की
प्यास बुझाने
थपकी दे-देकर
विवेक को
अनुचित को अपनाया होगा
वही आग बन
जला रहा है
सुख-स्वप्नों को

घनी धुंध जो
बाहर लगती
अक्सर
अपनी आँखों पर ही
छा जाती है
मिथ्या की मायावी तन्द्रा
जकड़े जाती
और तिमिर की
काली कारा के कपाट
कब खुल पाते हैं

कभी कहीं की सुविधा को
हम छोड़ सकें तो
अभी यहीं पर
मन के उस अंधे कोने को
धो देना होगा विवेक से
और बुद्धि की
खिड़की के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

हर किवाड़ को खोल
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
पवन के झोंके आने देने होंगे

तब प्रकाश की किरणों से
टकरा-टकरा कर
धुंध स्वतः ही फट जायेगी

कभी कहीं पर खोज-खोज
थक जाने पर भी
नहीं मिटेगा
यहीं कहीं होगा उद्गम
उसका मन के ही भीतर
महाशून्य-सा अंधकार
जो लील रहा
हर ज्योति पुँज को।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समर्पण

यह
जो मुँह फेर कर
सजा दी है
सर माथे है

दोष हो न हो
दण्ड
क्योंकि तुमने दिया है
स्वीकार है

तुम्हारा दिया
प्यार हो
या कि वह
मुँह फेर लेने की सजा
सभी कुछ
वरदान है

कभी
पाओ यदि निर्दोष
दण्ड देने के आवेश का
दु:ख न करना

मैं तो हूँ
सर्वांग-संपूर्ण-समर्पित
आराध्य मेरे

मेरी तो
यही नियति है—
तुम्हें देना है
मुझे पाना है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रोहिड़े

परिचय के ठूँठ
अपरिचय से भी अधिक
उदास

आभास
यह कि अपने ही अधर
काँटे हो गये
छुअन के मेले
कूच कर गये

रह गये
खेमों के खूँटों के
विलीन होते खड्डे
खुशियों के
दूर जाते पदचिह्न

लहलहाते क्षण
छुप गये
उभर उठे झुलसाये-से
रोहिड़े

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

हाँ, रोहिड़े मरुथल के
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
वे जीवन्त ठूँठ
जिनके तने हैं
जड़ भी
कहीं ऐसा कुछ
सूख गया
कि नहीं लहलहाते पत्ते
न फूटतीं कोंपलें कभी
कभी फूल नहीं खिलते
ठूँठ सिर्फ ठूँठ

हवा सांय-सांय करती
छूती तो है
पर गुज़र जाती है
बिना सहलाये ही

हाथ फैलते तो हैं
पर बाहों के घेरे में
सिमट आती है
शून्य की बेजान काया ही
बार-बार

बन्द हों या खुली
आँखों से नजर आते हैं
केवल उदास
अपरिचय से भी अधिक
परिचय के ठूँठ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दोस्तों ने मार दिया

वो एक आदमी
जो शायद
ज़िन्दा रहता
दुश्मनों के बीच
दोस्तों ने मार दिया
और वह भी
दिन-दहाड़े
रास्ते के बीच

यह समाचार
कुछ नहीं बन सका
समाचार से अधिक

आदमी
अपनी सुविधाओं से परे
हट नहीं सका
नया कुछ
सोच नहीं सका
तोड़ नहीं सका
वह व्यामोह
जिसमें उलझा आदमी
मन से
दोस्त बनता नहीं
कुछ मीठे दायित्व
बढ़ाता नहीं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बढ़ाता रहता
परिचितों की
एक फेहरिश्त
छुपाता रहता
चिकनी पर्तों के नीचे
औपचारिकता की
पीप भरे
टीसते घाव

ये टूटा हुआ
साबुत आदमी
दुश्मन के आने पर
अकेला ही लड़ता
या फिर
दोस्तों के हाथों
अकेला ही मरता

आदमियत के टीसते घाव
पीप की सड़ी गंध लिये
यों
नित्य ही
उघड़ते
पर समाचार से अधिक
कुछ नहीं बन पाते।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विश्वास

लिख दो मेरा नाम
गुनहगारों में
लेकिन
एक बार तो पूछो
ये चौखट पर हर पल
दीप जला कर जो रखता
उसकी बाती में
चर्बी-सा वह क्या जलता?

अमिट सम्पदा
मेरे उन विश्वासों की
जो जल-जलकर भी
जीवन पाती रहती है

दुनिया बदली
मंज़र बदले
आँसू बदले
काँटे बदले
शायद मैं भी बदल गया
पर मेरा वह विश्वास
अभी तक ज्यों का त्यों है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

और जमाने के अधरों पर
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
है भोला-सा प्रश्न
कि अब भी ऐसा क्यों है?
क्यों चौखट पर
दीप जला कर रखता
अब भी हर दिन ही?

यह गहरा विश्वास
द्वार के दीपक में जो
चर्बी-सा जलता रहता है
क्या होता है?
पूछ सको तो शायद
उत्तर समझ सकोगे

क्यों होता है?
पूछो तो
बेशक!
लिख दो
मेरा नाम गुनहगारों में।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यहीं बुद्ध ने जन्म लिया था?

यहीं कहीं चुपचाप
उदासी के साये में
जन्म लिया था
कभी बुद्ध ने

आज वहीं चुपचाप
उदासी के साये में
नीड़ बनाया
एक गिद्ध ने

यहीं कहीं
पीड़ा के वन में
अंतहीन पगडण्डी पर
चल-चल कर
नंगे पाँवों से
आने वाली पीढ़ी के हित
परम शान्ति का पथ
प्रशस्त कर
चला गया था

यहीं कहीं उस शान्ति और
सुख के उपवन में
फूल तोड़ते लोगों का
ताँता लगता था

आते-जाते
हिंसा के बीजों को बोते
और स्वार्थ की खाद डालते

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

युग बीते कितने ही
कितनी सदियाँ बीतीं
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यहीं कहीं वह
शान्ति और सुख का उपवन
कब बदल गया
पीड़ा के जंगल में फिर से

शान्ति-सुमन की गंध ढूँढ़ते
अब पाँवों में काँटे चुभते
मंत्र-पाठ की ध्वनियाँ
अब खोईं बीहड में
पौधों के झंखाड़ बने
उनके पीछे से
बस हिंसक आँखें
तकती ही रहतीं

यहीं कहीं चुपचाप
उदासी के साये में
नीड़ बनाया एक गिद्ध ने

वहीं ठूँठ के नीचे बैठा
एक अभागा देख रहा
ललचाई आँखों का
हर पल बढ़ता साहस
और ठगा-सा सोच रहा है :

क्या यहीं कहीं चुपचाप
उदासी के साये में
जन्म लिया था
कभी बुद्ध ने?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बियाबानों भटकता मन

बियाबानों भटकता मन
आना चाहता
कभी बस्तियों में
तोड़ना चाहता
अकेलेपन की
ठूँठ निर्जनता को
बहुत कुछ
कहना चाहता
लोगों के बीच
कुछ होना चाहता
लोगों की तरह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

पर ठिठक जाता
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
दिलों में उगी झाड़ियाँ देख
ठूँठ देख विचारों में
खोया आदमी देख
भीतर की भूलभुलैया में
सहम जाता
बस्ती और बियाबान में
अन्तर नहीं पाता
आदमी अकेला
वहाँ भी, यहाँ भी

पर तभी
दोराहे से
होती प्रशस्त
एक तीसरी राह
सबसे बड़ी
आदमी की
शाश्वत सुख की चाह।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कबीर

वो जुलाहे का बेटा
बँटता रहा
बँटते-बँटते
शून्य नहीं
हो गया
मनुष्य सम्पूर्ण

पर आदमी यह नहीं मानता
अक्सर यही सोचता
बँटना नहीं
जुड़ना ही बनाता पूर्ण

और यों
जुड़ता ही रहता
जुड़ते-जुड़ते अन्त में
हो जाता शून्य
आदमी ही नहीं रहता।

•••

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

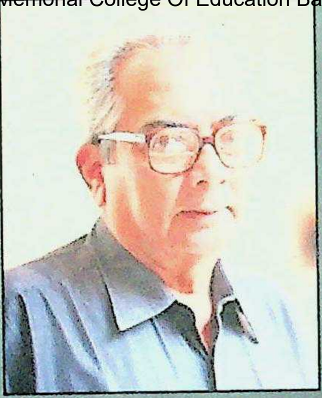

सुरेन्द्र बोथरा 'मनु' : व्यावसायिक परिवार से संबद्ध। शिक्षाकाल से ही साहित्यिक रुझान। साठ के दशक से हिन्दी व अंगरेजी भाषा में नियमित लेखन आरंभ। लेख, व्यंग्य व कविताओं का विविध पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। जैन धर्म-दर्शन का विशेष अध्ययन। लोकप्रिय पुस्तक-'अहिंसा : द साइंस ऑफ पीस' के अतिरिक्त आचारांग सूत्र, भगवती सूत्र, दशवैकालिक सूत्र, उत्तराध्ययन सूत्र, आदि पन्द्रह जैन आगमों व अन्य अनेक जैन पुस्तकों के अंगरेजी अनुवाद प्रकाशित। प्राचीन भारतीय ज्ञान संपदा व आधुनिक जगत् के बीच एक प्रभावी सेतु बनाने के ध्येय के प्रति समर्पित।

सर्जना
शिवबाड़ी रोड
बीकानेर 334003

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant